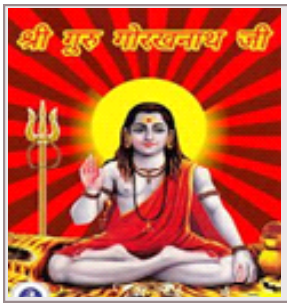

गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

सरल लिखना बहुत कठिन है क्योंकि सरल लिखने के लिए सरल भाषा नहीं चाहिए, सरल लिखने के लिए सरल हृदय चाहिए ।

- हरिवंशराय बच्चन

सत्र : 2024-25

जनवरी, 2025

संदेश

संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार करने के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग द्वारा विभागीय पत्रिका का शुभारंभ विभाग का एक सराहनीय कदम है। महाविद्यालय के हिंदी विभाग ने हिंदी के कार्यान्वन की प्रगति में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। बदलते हुए समय की आवश्यकताओं के अनुरूप हिंदी को तकनीकी दृष्टि से समृद्ध बनाने के लिए विभाग, अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ', डिजिटल शब्दकोश एवं कृत्रिम मेधा को अधिकाधिक छात्रोपयोगी बनाने के लिए सतत रूप से कार्यरत है। मेरा आपसे अनुरोध है कि अपने काम-काज में इन हिंदी टूल्स का अवश्य उपयोग करें।

आज सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी पूरे देश को जोड़ने का काम कर रही है। हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है बल्कि देश के आम जन तक भारत सरकार की नीतियों, जन उपयोगी योजनाओं, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारियों को पहुंचाने का सशक्त माध्यम है।

विभाग की इस पत्रिका में जहां एक ओर विभिन्न रचनाकारों की जयंती और पुण्यतिथियों का अवलोकन मिलता है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के बारे में जानकारी एवं विभागीय गतिविधियों की झलकियां भी प्रस्तुत की जाएगी ।

विभागीय पत्रिका के माध्यम से रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहन तो मिलता ही है, साथ ही विविधतापूर्ण विषयों पर उपयोगी जानकारी भी सुगमता से उपलब्ध होगी । पत्रिका के प्रथम अंक में विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक एवं रोचक सामग्री प्रकाशित की गई है। आशा करता हूं कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

हिंदी विभाग को व पाठकों को शुभकामनाएं।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

हिंदी संवर्द्धन

वर्तमान परिप्रेक्ष्य और हमारी जिम्मेदारी

हिंदी केवल एक भाषा नहीं है; यह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है। यह भाषा भारत की विविधता को एक सूत्र में पिरोने का सशक्त माध्यम है। लेकिन आज के वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के दौर में हिंदी संवर्द्धन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस हो रही है।

हिंदी, अपनी विशालता और सौंदर्य के बावजूद, आज कई चुनौतियों का सामना कर रही है। अंग्रेजी का बढ़ता प्रभुत्व, क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति असंतुलन और डिजिटल युग में अंग्रेजी की प्रधानता ने हिंदी के विकास की गति को बाधित किया है। युवाओं के बीच हिंदी के प्रति रुचि घट रही है और इसका उपयोग केवल औपचारिक सीमाओं तक सीमित हो रहा है।

संवर्द्धन के लिए सामूहिक प्रयास
हिंदी के संवर्द्धन के लिए हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर ठोस प्रयास करने होंगे।

शिक्षा में हिंदी का प्रचार
हिंदी को प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक एक प्रभावी माध्यम बनाना चाहिए। हिंदी में उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम, शोध और तकनीकी सामग्री तैयार करने की आवश्यकता है।सोशल मीडिया, वेब पोर्टल, ब्लॉग और ऐप्स जैसे डिजिटल माध्यमों में हिंदी की उपस्थिति बढ़ाने से यह भाषा युवा पीढ़ी के करीब आएगी। हिंदी में डिजिटल सामग्री का निर्माण और उपयोग हिंदी को सशक्त करेगा। हिंदी साहित्य और सिनेमा भाषा के संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समकालीन विषयों पर हिंदी में नए साहित्य और सशक्त फिल्मों का निर्माण युवाओं को भाषा के प्रति आकर्षित कर सकता है।

सरकारी योजनाओं और नीतियों में हिंदी के उपयोग को प्राथमिकता देना चाहिए। साथ ही, हिंदी दिवस जैसे आयोजनों को और अधिक व्यापक बनाया जाए, ताकि हिंदी के प्रति जागरूकता फैले।

हिंदी के संवर्द्धन की जिम्मेदारी केवल सरकार या संस्थाओं की नहीं है। प्रत्येक नागरिक को यह प्रयास करना चाहिए कि वह अपनी भाषा का सम्मान और प्रचार करे। दैनिक जीवन में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करें और अगली पीढ़ी को हिंदी का महत्व समझाएं।हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारे देश की आत्मा है। इसका संवर्द्धन हमारे समाज और संस्कृति को मजबूत बनाने के लिए अनिवार्य है। जब तक हम अपनी भाषा को महत्व नहीं देंगे, तब तक हमारा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक विकास अधूरा रहेगा। इसलिए, यह समय है कि हम हिंदी को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं और इसके संवर्द्धन में योगदान दें।

- संपादक

हिंदी विभाग

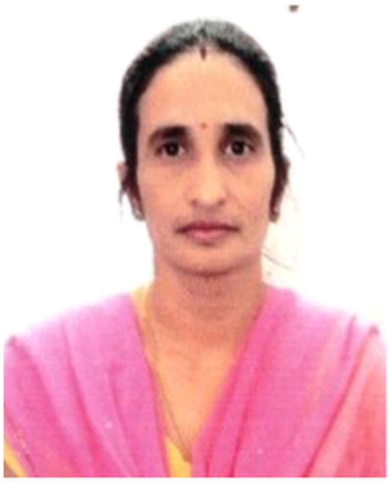

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

साहित्य और जीवन का घनिष्ट संबंध है। जीवन के विविध विषय साहित्य की विविध विधाओं में व्यक्त होकर व्यापक और मार्मिक हो उठते है। साहित्यकार का संबंध समाज से है। किसी भी देश की भाषा और उसका साहित्य उसकी धरोहर है। साहित्य वही है जो मानव का हित साधन करे, उसे प्रगतिशील बनाये, साहित्य की यही विशेषता उसे कालजयी बनाती है। साहित्य का कमिक विकास मानवता के कमिक विकास से जुडा है। भारतीय जीवन के निर्माण की पृष्ठभूमि भी उसके साहित्य से निर्मित है।

भारतीय धर्म साधना ने इतिहास में अनेक राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक उथल-पुथल का युग देखा है। इस धार्मिक साधना ने भारतीय समाज को संवार कर पैसे सांचे में ढाला है। जिसकी समृद्धि और सम्पन्नता का स्वर आज भी हमें सुनाई देता है।

भारतीय धर्म साधना के इतिहास में नाथ सम्प्रदाय का अत्यधिक महत्व है। नाथ साहत्यि ने हिंदी के भक्ति काल में संत साहित्य की पीठिका निर्मित की है। निर्गुण भक्ति काव्य में भी एक सशक्त धारा को निर्मात्री इस योग धारा के काव्य का विशिष्ट महत्व है। नाथों की योग साधना सिद्धों कें वाममार्गी भोग प्रधान साधना की प्रतिकिया के रूप में प्रारम्भ हुई थी। मध्य युगीन हिन्दी साहित्य के इतिहास में परिपक्व और भारतीय चिन्तन धारा का रूप लेकर नाथ साहित्य हमारे सामने आता है। भारतीय धर्म साधना में उथल-पुथल के युग में गोरखनाथ ने भारतीय जीवन को उद्बुद्ध करने का व्रत लिया था, तत्कालीन समाज की अमर्यादित जीवन शैली, स्वेच्छाचारिता, साधना के आश्रम में भोग विलास, अनैतिकता, आडम्बर जैसे विकारों के वातावरण में जनमानस को संयमित एवं अनुशासित जीवन देने के लिये नाथ सम्प्रदाय का प्रवर्तन गोरखनाथ ने किया और शुद्धाचार, शुद्ध जीवन, सात्विकता और यर्थात जीवन का स्वरूप जन-मानस के आगे रखा।

गोरखनाथ ने अनेक सम्प्रदायों का संघटन किया क्योंकि उस समय में सारा देश वेदानुयागी और वेद-विरोधी दो भागों में विभक्त हो चुका था। गोरखनाथ ने शैव और शाक्त मतों को स्वीकार किया, ये सभी गोरखनाथ के नाथ सम्प्रदाय को ही मानने लगे। गोरखनाथ ऐसे सम्प्रदाय के प्रर्वतक माने जाते है। जो अपनी विभिन्न परम्पराओं को लिये हुये देश के विभिन्न स्थानों में अब भी पाये जाते है। इस प्रकार गोरखनाथ अपने युग के महान व्यक्तित्व के स्वामी थे जिनमें अपूर्व संगठन शक्ति थी। शंकराचार्य के बाद गोरखनाथ निसंदेह एक पैसे महापुरूष हुये जिन्होने एक शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन की नीव रखी।

हमारे देश की यह विशेषता रही है कि यहाँ प्रत्येक युग में चिंतन एवं साधना की अनेक धारायें प्रवाहित रही है। जिन्होने भयाकांत एवं स्वेच्छाचारी जीवन के अनेक आदर्श देकर साधना के उच्चतम मार्ग प्रशस्त किये है। इन साधनाओं के प्रवर्तकों में गोरखनाथ का नाम अत्यन्त आदर एवं श्रृद्धा के साथ लिया जाता है। इन्होने समाज को संयमित कर आदर्श जीवनका पथ प्रशस्त करते हुये नाथ सम्प्रदाय की रूपरेखा प्रस्तुत की। सामाजिक एवं पुर्नजागरण के साथ इन्होने हिन्दी साहित्य के भक्ति युग की पृष्ठभूमि के रूपमें कार्य किया है।

चारित्रिक उत्कर्ष और पवित्रता के आग्रह के साथ स्मार्त आचारों की अवहेलना और योग साधना की प्रतिष्ठा, निर्गुण ब्रह्म में विश्वास, ज्ञान की प्रतिष्ठा लोक भाषा की अभिव्यक्ति के द्वारा की है। निःसंदेह गोरखनाथ का हिन्दी साहित्य के प्राचीन काल में महत्वपूर्ण स्थान है।

"आखिर इस व्यक्ति का जीवन क्या रहा होगा, जिसका नाम गाँव गाँव में अटूट श्रृद्धा और भय के साथ लिया जाता है।" वह योगी, महान थे कि कवि थे, या प्रचारक परंतु वह हाड़-माँस के पुतले थे, जिसकेऊपर भी कठिनाईयाँ और आपत्तियाँ आती थी, यह उनकी किवदन्तियों से ज्ञात होता है... व्यक्ति का दुसह होकर उनके पीछे इतनी कहानियों का जुड़ जाना उसके प्रखर और प्रभावशाली व्यक्तित्व का द्योतक है।"

देश के कोने-कोने में आज भी उनके अनुयायी है। गोरखनाथका योग मार्ग भक्ति आंदोलन के पूर्व का सर्वाधिक प्रभावपूर्ण धार्मिक आंदोलन था।" गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे। इन्होने जिस धातु को छुआ वह सोना हो गया। अपने संप्रदाय में सत्य की प्रतिष्ठा करने वाले गोरखनाथ का व्यक्तित्व निःसंदेह एक महान योगी का है। उनका यह सत्य उनकी भाषा के माध्यम से उनकी वानियों में स्वतः स्फुरित होता है।

जयशंकर प्रसाद

एक परिचय

जन्म:- 30 जनवरी 1890
जन्मस्थान:- काशी उत्तर प्रदेश
पिता का नाम :- श्री देवी प्रसाद
माता का नाम:- मुनी प्रसाद
प्रारंभिक शिक्षा:- काशी क्वींस कॉलेज
प्रारंभिक शिक्षक:- मोहिनी लाल गुप्त
भाषा:- ब्रजभाषा,खड़ी बोली
साहित्यिक पहचान:-प्रसाद युग के निर्माता और छायावाद के प्रवर्तक के रूप में
सम्मान:- मंगलाप्रसाद पारितोषिक सम्मान (कामायनी)
मृत्यु:- 15 नवंबर 1937
प्रसिद्ध रचनाएं:-
(पहली कविता सावन पंचक 1906 में भारतेंदु पत्रिका में कलाधर नाम से प्रकाशित)
कामायनी (महाकाव्य)
करुणा,स्कंदगुप्त,आंसू,चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी (नाटक)
तितली (उपन्यास)
अमृत-धारा, धूमिल, झरना आदि (काव्य संग्रह)

कम्प्यूटर विषयक

संगणक – Computer
समादेश - Command
आँकड़ा - Data
यंत्र सामग्री - Hardware
प्रक्रिया सामग्री - Software
कुंजी पटल – Keyboard
कूट लेखन - Encoding
अंतरजाल - Internet
सक्रिय, चालू - Active
स्वचालित -Automatic

शब्द शुद्धि

अतिथी-अतिथि
अंत्येष्ठि -अंत्येष्टि
अनुगृह-अनुग्रह
अनेकों-अनेक
अंतर्साक्ष्य-अंत:साक्ष्य
आर्शिवाद- आशीर्वाद
अधिक्षक-अधीक्षक
अंवेषण-अन्वेषण
अपरान्ह-अपराह्न
अंतर्ध्यान-अंतर्भाव

रांगेय राघव
एक परिचय

मूल नाम:- तिरुमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य
साहित्यिक नाम:- रांगेय राघव
जन्म:- 17 जनवरी 1923
जन्मस्थान:- आगरा , उत्तर प्रदेश (तमिल कुल)
पिता का नाम:- श्री रंगाचार्य
माता का नाम:-श्रीमती कमकवल्ली
पत्नी का नाम:- सुलोचना राघव (विवाह 1962)
शिक्षा:- एम.ए. , पी.एच.डी. हिंदी साहित्य
भाषा:- हिंदी, संस्कृत, ब्रज ,अंग्रेजी
काल:- आधुनिक काल (प्रेमचंदोत्तर युग)
उपाधि:- हिंदी का शेक्सपियर
मृत्यु:- कैंसर से 12 सितंबर 1962 (मुंबई ,महाराष्ट्र)
प्रमुख रचनाएं:-
उपन्यास = घरौंदा,विषाद मठ , मर्दों का टीला, सीधा-साधा रास्ता, हुजूर, अंधेरे के जुगनू, कब तक पुकारू, आखिरी आवाज, राह न रुकी
कहानी संग्रह = देवदासी , साम्राज्य का वैभव, समुद्र के फैन, जीवन के दाने , अंगारे न बुझे, इंसान पैदा हुआ, एक छोड़ एक
रिपोर्ताज = तूफानों के बीच
नाटक = स्वर्ण भूमि की यात्रा, रामानुज, विरुढ़क
काव्य = अजेय, पिंघलते पत्थर, रूपछाया, मेधावी, राह के दीपक, पांचाली
पुरस्कार :-
१. हिंदुस्तान अकादमी पुरस्कार (1951)
२. डालमिया पुरस्कार (1954)
३. उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार (1957 व 1959)
४. राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार (1961)
५. महात्मा गांधी पुरस्कार (1966) मरणोपरांत ।
•इसके अलावा इन्होंने एक दर्जन के लगभग आलोचनाएं भी लिखी ।
•लेखन कार्य भले ही इन्होंने कविता से शुरू किया परंतु गद्य लेखक के रूप में इन्हें अधिक प्रतिष्ठा मिली ।
•भगवती चरण वर्मा द्वारा रचित "टेढ़े-मेढ़े रास्ते" के उत्तर में "सीधा-साधा रास्ता" उपन्यास व बंकिमचंद्र द्वारा रचित "आनंदमठ" के उत्तर में "विषादमठ" उपन्यास लिखा ।

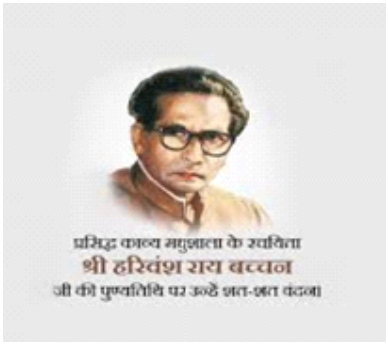

हरिवंश राय बच्चन
(27 नवम्बर 1907 – 18 जनवरी 2003)

Preeti (40)
08-01-1998
Mamta (33)
16-01-2003
Pooja (14)
20-01-2003
Nishu (46)
23-01-2001
Reenu (44)
26-01-2002

साहित्य प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- हिन्दी दिवस 14 सितंबर को मनाया जाता है।
प्रश्न 2. हिन्दी को आधिकारिक भाषा (राजभाषा) के रूप में मान्यता कब दी गई?
उत्तर- 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था।
प्रश्न 3. भारत के संविधान मां कितनी भाषाओं को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है?
उत्तर- 22 भाषाएं भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूचि में शामिल की गई हैं।
प्रश्न 4. हिंदी साहित्य में 'छायावादी युग' के चार प्रमुख कवि कौन-कौन से हैं?
उत्तर- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा।
प्रश्न 5. हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
उत्तर- देवनागरी लिपि
प्रश्न 6. हिन्दी की उत्पत्ति किस भाषा से हुई है?
उत्तर- हिन्दी भाषा की उत्पत्ति अपभ्रंश भाषाओं से हुई है। अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति प्राकृत से हुई। प्राकृत, पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है।
प्रश्न 7. हिंदी के किस कवि को 'राष्ट्रकवि' कहा जाता है?
उत्तर- रामधारी सिंह दिनकर को राष्ट्रकवि कहा जाता है।
प्रश्न 8. 'विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा' के संदर्भ में हिन्दी का कौन सा स्थान है?
उत्तर- तीसरा
प्रश्न 9. भारत में किन राज्यों को 'हिंदी बेल्ट' कहा जाता है?
उत्तर- उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, झारखंड, दिल्ली, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश।
प्रश्न 10. हिन्दी भाषा के लिए पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार किसे मिला था?
उत्तर- हिन्दी के लिए पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार सुमित्रानंदन पंत को वर्ष 1968 में मिला था।

पुण्यतिथि

रामस्वरूप खटोड़
(01 जनवरी 1933 - 19जनवरी 2023)

कम्प्यूटर और हिन्दी टाइपिंग की प्रायोगिक परीक्षा लेते हुए डॉक्टर राजपाल

विदेशी शब्द

हिंदी में कई विदेशी भाषाओं से लिए गए शब्द शामिल हैं, जिनमें से प्रमुख भाषाएँ फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेज़ी, संस्कृत, और फ्रेंच हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

1. फारसी (Persian)
- बाग़ (Garden)
- दरवाज़ा (Door)
- क़लम (Pen)
- सजा (Punishment).

2. अरबी (Arabic)
- किताब (Book)
- हिसाब (Account)
- जमील (Beautiful)
- वजीर (Minister)

3. तुर्की (Turkish)
- क़िला (Fort)
- तोप (Cannon)
- बाजार (Market)

4. पुर्तगाली (Portuguese)
- अलमारी (Cupboard)
- साबुन (Soap)
- पादरी (Priest)

5. अंग्रेज़ी (English)
- ट्रेन (Train)
- डॉक्टर (Doctor)
- स्टेशन (Station)
- पुलिस (Police)

6. फ्रेंच (French)
- रेजीमेंट (Regiment)
- गारद (Guard)

ये शब्द हिंदी भाषा के विकास के दौरान विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के संपर्क में आने के कारण हिंदी में समाहित हुए हैं।

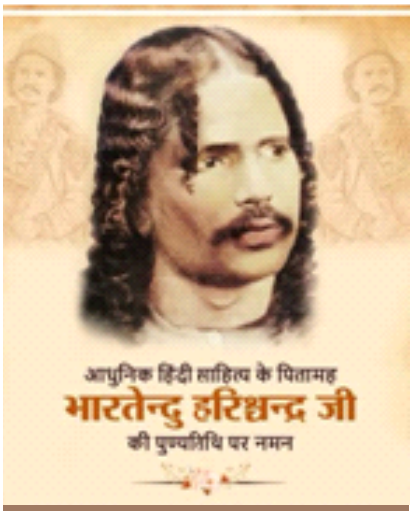

(9 सितंबर, 1850 - 6 जनवरी 1885)

डॉ. राजपाल की पुस्तक 'साहित्यिक शोध की प्रविधि' का हुआ विमोचन

सच कहूँ/संदीप सिंहमार

हिसार। गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार के हिंदी विभाग में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. राजपाल की साहित्यिक शोध की प्रविधि पुस्तक का विमोचन हुआ। पुस्तक विमोचन समारोह में उच्चतर शिक्षा जिला अधिकारी डॉ. कमलेश दूहन, राजकीय महाविद्यालय नलवा, प्राचार्या डॉ. विवेक सैनी, गुरु गोरक्षनाथ जी राजकीय महाविद्यालय , प्राचार्य डॉ. पवित्र मोहन, राजकीय महाविद्यालय हांसी ,पूर्व प्राचार्य डॉ. रामप्रताप, राजकीय महाविद्यालय हांसी व हाल ही में नव नियुक्त प्राचार्य डॉ. कृष्ण कुमार मौजूद रहे। पुस्तक विमोचन समारोह में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक सैनी ने कहा कि इस तरह के लेखन से नवाचार को बढ़ाने मिलने के साथ-साथ अन्य प्राध्यापकों को को भी प्रेरणा मिलती है। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश ख्यालिया ने डॉ.राजपाल को बधाई देते हुए कहा कि इस पुस्तक से शोधार्थियों को लाभ मिलेगा। पुस्तक के बारे में बताते हुए डॉ. राजपाल ने कहा कि साहित्यिक शोध की प्रविधि साहित्य के गहन अध्ययन और विश्लेषण के लिए विकसित की गई तकनीकें और तरीके हैं। ये प्रविधियाँ शोधकर्ता को सुनियोजित रूप से अपने शोध कार्य को संचालित करने में सहायता प्रदान करेगी।

पुस्तक का विमोचन करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य व अन्य गणमान्यजन। छाया : रामनिवास

उन्होंने बताया कि इस पुस्तक के माध्यम से शोध समस्या की पहचान करने में भी मदद मिलेगी। सबसे पहले शोधकर्ता को यह समझना चाहिए कि वह किस समस्या पर काम कर रहा है और उसका उद्देश्य क्या है? इस प्रक्रिया में पहले से उपलब्ध साहित्य का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है ताकि अनुसंधान के लिए सही दिशा निर्धारित की जा सके अनुसंधान के लिए शोध विधियों का चयन किया जाना चाहिए, जैसे कि गुणात्मक, मात्रात्मक, या मिश्रित विधियाँ। डॉ. राजपाल ने बताया कि इस पुस्तक में डेटा संग्रह, डेटा का विश्लेषण, विवरण और निष्कर्ष व संदर्भ सूची के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया है। इन प्रविधियों का ध्यानपूर्वक पालन करके शोधकर्ता सही निष्कर्ष निकाल सकते हैं और साहित्यिक अध्ययन में मूल्यवान योगदान दे सकते हैं। इस मौके पर डॉ.सतीश वर्मा, प्रो.राजेंद्र सेवदा, दुष्यंत कुमार, डॉ. प्रवीण, मनोज कुमार रोहिल्ला समस्त हिन्दी विभाग के प्रोफेसर मौजूद रहे।

विश्व हिंदी दिवस

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है, जो हिंदी भाषा के महत्व और इसके वैश्विक प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समर्पित है. यह दिन 2006 में भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा घोषित किया गया था. इस अवसर पर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है. विश्व स्तर पर हिंदी को एक सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए यह दिन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यहां जानें कुछ सवालों के जबाब:-

1. विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?
विश्व हिंदी दिवस हर साल 10 जनवरी को मनाया जाता है. यह दिन हिंदी भाषा की अहमियत और उसके वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित है. 10 जनवरी 2006 को तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस दिन को पहली बार विश्व हिंदी दिवस के रूप में घोषित किया था.इसका उद्देश्य हिंदी को वैश्विक स्तर पर एक सम्मानजनक स्थान दिलाना है.

2. विश्व हिंदी दिवस की शुरुआत कब हुई थी और क्यों?
विश्व हिंदी दिवस की शुरुआत 10 जनवरी 2006 को भारत सरकार ने की थी. इस दिन को खास तौर पर हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार के उद्देश्य से मनाया जाता है. इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति और भाषा की वैश्विक पहचान बनाने का प्रयास किया जाता है.
हिंदी, जो दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, का सम्मान बढ़ाने का यह एक महत्वपूर्ण कदम है.

3. विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य क्या है?
विश्व हिंदी दिवस का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को वैश्विक मंच पर बढ़ावा देना है. इसे अन्य देशों में भी शिक्षा, साहित्य, और कला के माध्यम से लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया जाता है. साथ ही, यह दिन हिंदी बोलने वालों को अपने भाषा के प्रति गर्व और सम्मान महसूस कराता है. इसका उद्देश्य हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना है.

4. विश्व हिंदी दिवस से जुड़ी प्रमुख घटनाएं और कार्यक्रम कौन से हैं?
विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे हिंदी साहित्य सम्मेलन, सेमिनार, और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां. भारत और विदेशों में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएं हिंदी के प्रचार के लिए विभिन्न कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं. इसके अलावा, कई विश्वविद्यालयों और संस्थानों में विशेष हिंदी भाषण और लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है.

5. हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करने में किसका योगदान रहा है?
हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भारत सरकार और हिंदी साहित्यकारों का प्रमुख योगदान रहा है. भारतीय कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में हिंदी को एक संवाद भाषा के रूप में मान्यता दिलाने में है.

कविता

रिश्ते

अपने रिश्ते को बंधन में मत बांधिए,
खुले में उसे तुम, जरा छोड़ दीजिए।
अपना जो होगा, कहीं जायेगा नही,
मतलबी वहां पे कहीं ठहरेगा नही।
जो अपना है, उसे थोड़ा पहचानिए।
अपने रिश्ते को बंधन में मत बांधिए।
रिश्ता गरीबी अमीरी को नही देखता,
उम्र, जात, वर्ग, धर्म को नहीं देखता।
प्रेम, हवस की तराजू पे मत तोलिए।
अपने रिश्ते को बंधन में मत बांधिए।
चाहा जिसे, उसे कुछ मिला ही नहीं,
पाया उसने जिसे उसकी कद्र ही नहीं।
सब्र के फल को कड़वा मत कीजिए।
अपने रिश्ते को बंधन में मत बांधिए।
दोस्त से ज्यादा, देख कोई रिश्ता नहीं,
समझे तो कोई उस सा फरिश्ता नही।
बिखरे राज को जरा संभाल लीजिए।
अपने रिश्ते को बंधन में मत बांधिए।
खुले में उसे तुम जरा छोड़ दीजिए।

डॉ. आर पी राज

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Abandonment = परित्याग

Abbreviation = संक्षेप/संक्षेपण

Ability = योग्यता

Abnormal = अपसामान्य

Abolition = उन्मूलन/समाप्ति

Above cited = उपर्युक्त

Above par = औसत से ऊँचा

Abridge = संक्षेप करना

Absence = अनुपस्थिति

Abuse = दुरुपयोग

Academic = शैक्षणिक

Council = परिषद्

Academy = अकादमी

Accede = मान लेना /सम्मिलित

Acceptability = स्वीकार्यता

Acceptance = स्वीकृति

Accident = दुर्घटना/संयोग

Accord = समझौता, देना/

Account = लेखा/खाता/

Accountibility = उत्तरदायित्व/ जवाब देही

Accuracy = यथार्थता/शुद्धता

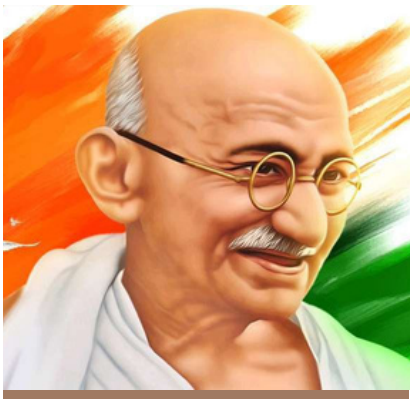

पुण्यतिथि

महात्मा गांधी जी

02 अक्तूबर 1869 - जनवरी 30 1948